कुरान में

अन्य मतावलम्बियों के लिये

अतिकठोर, उत्तेजक वाक्यों का संग्रह

संग्रहीता :—

श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी

प्रकाशक :—

मन्त्री—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली।

सं २०००] फरवरी १९४४ [मूल्य ॥)

5370

ओ३म
गुरु विरजानन्द दण्डी
संदर्भ पुस्तकालय
दयानंद महिला महाविद्यालय
कुरुक्षेत्र
5370
वर्गीकरण नम्बर
पु. परिग्रहण क्रमांक ..

...edge and of all

... and Blissful. ...rciful, Unborn, ..., Unequalled, All-Pervading, ...ortal, Fearless, ... of the Universe.

...he Scriptures of true I... the first duty of all Aryas to read them, teach them, recite them and hear them being read.

4. One should always be ready to accept Truth and to give up Untruth.

5. One should do everything according to the dictates of *Dharma* (righteousness) i.e. with due regard to Right and Wrong.

6. The primary object of this Society is to do good to the whole world, i.e. to achieve its physical, spiritual and social progress.

7. One's dealings with all should be regulated by Love and Justice in accordance with the dictates of Dharma (righteousness).

8. One should promote Vidya (knowledge) and dispel Avidya (ignorance).

9. One should not be content with one's own welfare but should look for one's own welfare in the welfare of all.

10. One should regard oneself under restriction in following rules of social welfare, while in following rules of individual welfare all should be free.

डा० मनोमिलन पारख

भूमिका

विषय ... दिनांक ...

२५ दिसम्बर सन् १९४३ [illegible] में अखिल भारतीय मुस्लिम लीग का जो अधिवेशन मि० मुहम्मद अली जिन्ना के सभापतित्व में हुआ उसमें सत्यार्थप्रकाश के उन समुल्लासों की ज़ब्ती के सम्बन्ध में एक प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकृत किया गया जिनमें अन्य मतों के प्रवर्तकों को विशेषत: इस्लाम के प्रवर्तक मुहम्मद पैग़म्बर के विरुद्ध आलोचना की गई है। इस प्रस्ताव को मुस्लिम लीग के सामने रखते हुए लाहौर के प्रोफ़ेसर मलिक इनायतुल्ला ने जो भाषण दिया उसका सारांश देहली के मुस्लिमलीगी अङ्गरेज़ी पत्र 'Dawn' के २७–१२–४३ के अङ्क में इस प्रकार दिया गया था—

Moving the resolution on 'Satyarth Prakash Professor Malik Inayatullah of Lahore said that *since the beginning of Islam' Muslims had never made Offensive remarks against any religion.* ......Muslims could not tolerate any further the continuance in the book of Chapter 12, 13 and 14 which were condemned by Muslims all over India."

(Dawn 27-12-43)

अर्थात् इस्लाम के प्रारम्भ से मुसल्मानों ने किसी धर्म के विरुद्ध अप्रिय वा दिल दुखाने वाली आलोचना नहीं की।...... मुसल्मान इस पुस्तक (सत्यार्थप्रकाश) में १२, १३, १४ समुल्लासों के जारी रहने को कभी सहन नहीं कर सकते जिनकी सारे भारत में मुसल्मानों ने घोर निन्दा की है। इत्यादि।

प्रो० इनायतुल्लाह तथा अन्य मुसल्मानों की यह बात कितनी असत्य है यह अरबी के सुप्रसिद्ध और भारत में अनुपम विद्वान् श्री पं० रामचन्द्रजी देहलवी द्वारा संकलित इस पुस्तक के पढ़ने से निष्पक्षपात पाठकों को भली भाँति ज्ञात हो जायगी। क़ुरान की

परिग्रहण क्रमांक ...

आयतों का जो अनुवाद इस पुस्तक में उद्धृत किया गया है वह डिपुटी नज़ीर अहमद के उर्दू अनुवाद और सेल के सुप्रसिद्ध अंग्रेजी अनुवाद से लिया गया है जिन्हें प्रामाणिक माना जाता है। सैयद अब्दुल्ला यूसुफ़ अली, रौडवेल आदि के अंग्रेजी अनुवाद तथा शाहरफ़ीउद्दीन और मौ० शाहवली उल्लाह के उर्दू अनुवाद इन वाक्यों के इसी आशय के हैं। पाठक देखेंगे कि मुसल्मानों के मूल धर्मग्रन्थ क़ुरान में अन्यमतावलम्बियों के लिये कितनी कठोरता और असहिष्णुता द्योतक शिक्षाएँ दी गई हैं। सत्यार्थप्रकाश में महर्षि दयानन्दजी की ऐसी शिक्षाओं के सम्बन्ध में यह युक्तियुक्त आलोचना कि

"अब देखिये पक्षपात की बातें कि जो मुसलमानों के मज़हब में नहीं हैं उनको काफ़िर ठहराना, उनमें श्रेष्ठों से भी मित्रता न रखने और मुसलमानों में दुष्टों से भी मित्रता रखने के लिए उपदेश देना ईश्वर को ईश्वरता से बहिः कर देता है इससे यह कुरान, कुरान का खुदा और मुसलमान लोग केवल पक्षपात अविद्या से भरे हुए हैं।" (सत्यार्थप्रकाश २४वीं आवृत्ति १४वाँ समुल्लास पृ० ३४६–३५०) "अब देखिये महा पक्षपात की बात है कि जो मुसलमान न हो उसको जहाँ पाओ मार डालो और मुसल मानों को न मारना भूल से मुसलमानों को मारने में प्रायश्चित्त और अन्य को मारने से बहिश्त मिलेगा ऐसे उपदेश को कूप में डालना चाहिए।" (स० प्र० १४ समुल्लास पृ० ३५२) इत्यादि उचित ही प्रतीत होती है जिसका एक मात्र उद्देश्य उनके अपने शब्दों में मनुष्यों की उन्नति और सत्यासत्य का निर्णय, हठ, दुराग्रह, ईर्ष्या, द्वेष, वाद विवाद और विरोध घटाना था न कि इनको बढ़ाना।" (१४ समुल्लास अनुभूमिका)

प्रो० इनायतुल्लाह का यह कथन कि इस्लाम ने प्रारम्भ से कभी अन्य मतों की अप्रिय वा कठोर आलोचना नहीं की यद्यपि

क़ुरान की उन आयतों से सर्वथा खण्डित हो जाता है तथापि मुसलमानों की ओर से जो पुस्तकें आर्य (हिन्दू) धर्म की आलोचना में लिखी गई हैं उनमें से दो-तीन निम्न उद्धरण देना अप्रासङ्गिक न होगा। अलीखान साहेब कृत 'नियोग का भोग' नामक पुस्तक में जो गुलजार इब्राहीम प्रेस मुरादाबाद में छपी थी निम्न कविता है जिस पर टिप्पणी अनावश्यक है।

इस्लाम के डंके को आलम में बजा देंगे।
चोटी को कटा कर, दाढ़ी को रखा देंगे॥
अब दाढ़ियाँ रखवा लें, इज्जत जिन्हें रखना हो।
वरना राहे हस्ती से, हम उनको मिटा देंगे॥
मां बहन भी जायज़ हो जिस मज़हब मिल्लत में।
हम तेल को छिड़कैंगे आग उसमें लगा देंगे॥
उन वेदों की तालीम की, वक़त नहीं कुछ दिल में।
दुनिया से मिटा देंगे, मिट्टी में मिला देंगे।
हों दुश्मने दीन लाखों, पर्वाह न करें 'हामी'।
हम गर्दनें पकड़ेंगे, कदमों पै गिरा देंगे॥

यह कितनी 'प्रिय' और 'कोमल' समालोचना है, पाठक स्वयं देखें तथा प्रो० इनायतुल्लाह इत्यादि इस पर विचार करें।

'रद्दे हिन्दू' नामक पुस्तक में जो सन् १९१३ में मुहम्मद फ़ख़रुद्दीन के प्रेस लखनऊ में छपी थी, आर्य हिन्दू मात्र के परम मान्य श्री रामचन्द्र जी, श्रीकृष्ण महाराज और परममान्या श्री सीता देवी जी के विषय में निम्न-लिखित समालोचना है।

पृष्ठ २८—"राम और कृष्ण वग़ैरह कि जिनको तुम लोग अवतार समझते हो सब **गुमराह और बदख्याल थे।**"

पृष्ठ ३१—सातवीं वजह यह है कि वो राम निहायत बेग़ैरत

(निर्लज्ज) और बेशरम था कि अपनी जोरू सीता की हराम कारी (व्यभिचार) और बदमुआमलगी मालूम करके घर से निकाल दिया।

पृष्ठ ३३—अजब यह है कि कृष्ण जैसे बदजात जानी (व्यभिचारी) फ़सादी को अवतार समझते हो। क्या यह मालूम नहीं कि कृष्ण अहीर यानी ग्वाले का बेटा था।"

पृष्ठ ४६— राम की सीता उठा रावण ने लङ्का ले गया।
हाथ जब लागा पराया, सत कहां उसमें रहा॥
और कृष्ण अवतार कहते सो था राना नाबकार।
उससा कोई दूसरा ज़ानी न था बदकार व ख़्वार॥
जुएबाजी में दिया कीन, कौनसा जूए में हार।
चोर था और था उचक्का, चुप तो रह कुछ दम न मार॥

पृष्ठ ५४—कब तलक प्रस्तिश करे, सफ़दर तू कर अब मुख़्तसर।
सच नहीं हिन्दू के सब, झूठे हैं सारे शास्तर॥

ऐसे ही 'तेग़े फ़कीर बर गर्दने शरीर' (बदमाश की गर्दन पर फ़कीर की तलवार) 'शुद्धि के अड़ियल टट्टू पर ताज़ियाना' 'तलक़ीने मज़हब' 'उन्नीसवीं सदी का महर्षि' 'शुद्धि तोड़' इत्यादि सैकड़ों मुसलमानों द्वारा अश्लील भाषा में लिखी हुई पुस्तकें हैं जिनके उद्धरण तक देना हमें अत्यन्त अप्रिय और अरुचिकर प्रतीत होता है। आशा है सब विचारशील सज्जन इस पुस्तक को ध्यान से पढ़कर सत्य को ग्रहण करेंगे।

धर्मदेव विद्यावाचस्पति
स० मन्त्री सार्वदेशिक सभा
श्री श्रद्धानन्द बलिदान भवन, देहली।

१८-२-४४

क़ुर्आन् में

अन्य मतावलम्बियों के लिये

कुछ अतिकठोर, उत्तेजक वाक्यों का संग्रह

(१) इज़ा लक़ुल्लज़ीन आमनू क़ालू आमन्ना, व इज़ा खलौ इला शयात्वीनिहिम् क़ालू इन्ना मअ़कुम् इन्नमा नःहनु मुस्तःज़िऊन्। (सू० २। रु० २। आ० १४)

अर्थः—और जब उन लोगों से मिलते हैं जो ईमान लाचुके तो कहते हैं हम ईमान ला चुके हैं, और जब तनहाई में अपने शैतानों से मिलते हैं तो कहते हैं हम तुम्हारे साथ हैं, हम तो सिर्फ़ (मुसलमानों को) बनाते हैं।

(इस आयत में ईसाई और यहूदी विद्वानों को शयातीन कहा गया है)

George Sale's Translation:—

When they meet those who believe they say we do believe: but when they retire privately to their *devils*, they say, we really hold with you and only mock at those people.

(FOOT NOTE).—The prophet, making use of the liberty zealots of all religions have, by prescription, of giving ill language, bestows this name on the Jewish rabbins and Christian priests; though he seems chiefly to mean the former, against whom he had by much the greater spleen.

(२) फ़इल्लम् तफ़्अ़लू वलन् तफ़्अ़लू फ़त्तक़ुन्नारल्लती, वक़ूदुहन्नासु वल् ह़िजारतु, उअ़िद्दत् लिल् काफ़िरीन्।
(सू० २। रु० ३। आ० २४)

(इस आयत में दोज़ख की आग का ईंधन मूर्ति पूजकों और मूर्तियों को बताया गया है। यह आयत सत्यार्थ प्रकाश के १४ वें समुल्लास के खण्डन नं० ८ में आचुकी है)।

सेल (Sale) साहब False gods and idols मुराद ली हुई फर्माते हैं देखो पृष्ठ ३ (Foot Note).

But if ye do it not nor shall ever be able to do it, justly fear the fire whose fuel is *men and stones*, prepared for the unbelievers.

(३) फ़ इम्मायातियन्नकुम् मिन्नी हुदन् फ़मन् तबिअ़ा हुदाया फ़ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम् वला हुम् यःज़नून्।
(सू० २। रु० ४। आ० ३८)

वल्लज़ीन कफ़रू व कज़्ज़बू बिआयातिना उलाइक अस्हाबुन्नारि हुम् फ़ीहा ख़ालिदून्।
(सू० २। रु० ४। आ० ३९)

अथः—अगर हमारी तरफ़ से तुम लोगों के पास कोई हिदायत पहुंचे (तो उस पर चलना क्योंकि) जो हमारी हिदायत की पैरवी करेंगे उन पर न तो (किसी क़िस्म का) खौफ होगा और न वह आज़ुर्दा खातिर (दुःखित) होंगे।

और जो लोग ना फ़र्मानी करेंगे और हमारी आयतों को झुठलायंगे वही दोज़खी (नरक वासी) होंगे, और वह हमेशा २ दोज़ख में रहेंगे।

(इस आयत में क़ुर्आन् व मुअ्‌जज़ात से इंकार करने वालों को और उनको झुठलाने वालों को) दोज़ख (नरक) में हमेशा के लिए रहने वाला बताया गया है।

"Hereafter shall there come unto you a direction from me, and whoever shall follow my direction, on them shall no fear come, neither shall they be grieved.

But they who shall be unbelievers, and accuse our signs of falsehood, they shall be the companions of *hell-fire, therein shall they remain for ever*".

(४) वइज़् क़ाल मूसा लिक़ौमिही याक़ौमि ! इन्नकुम् ज़्वलम्तुम् अन्फ़ुसकुन् बितिख़ाज़िकुमुल् इज्ल फ़तूबू बारिइकुम् फ़क़्तुलू अन्फ़ुसकुम्, ज़ालिकुम् खैरुल्लकुम् अिन्द बारिइकुम्। (सू० २। रु० ६। आ० ५४)

अर्थः—और जब मूसाने अपनी क़ौम से कहा कि भाइयो ! तुमने बछड़े की पूजा के इख्तयार करने से अपने ऊपर बड़ा ही ज़ुल्म किया तो (अब) अपने खालिक़ की जनाब में तोबा करो और (वह यह कि अपने लोगों के हाथों से) अपने तईं हलाक करो। जिसने तुमको पैदा किया है उसके नज़दीक तुम्हारे हक़ में यही बिहतर है।

(इस आयत में बछड़े या गाय वग़ैरः की पूजा करने वालों को) वाजिबुल क़त्ल (मारने योग्य) करार दिया है, जो हमेशा के लिए हिन्दू मुसलमानों में झगड़े का कारण है।

And when Moses said unto his people, O my people, verily ye have injured your own souls, by your taking the calf for your God; therefore be turned unto your Creator, and slay those among you *who have been guilty of that crime.* This will be better for you in the sight of your Creator.

FOOT-NOTE OF SALE'S TRANSLATION.—The commentators of the Koran make the number of the slain to amount to 70,000, and add, that God sent a dark cloud which hindered them from seeing one another, lest the sight should move those who executed the sentence to compassion. (Page.6.)

(५) व लिल् काफ़िरीन अज़ाबुम्मुहीन्।

(सू० २। रु० ११ आ० ९०)

अर्थः—और मंकिरों के लिये ज़िल्लत का आज़ाब है। (इस्लाम को न मानने वालों को भयंकर तिरस्कार होगा)

And the unbelievers *shall suffer an ignominious punishment.*

(६) मन् कान अदूवल्लिल्लाहि व मलाइकतिही व रुसुलिही व जिब्रील व मीकाल फ़ इन्नल्लाह अदूवल्लिल् काफ़िरीन्। (सू० २। रु० १२। आ० ६८)

यह आयत १४ वें समुल्लास के २१ वें खण्ड में आ चुकी है कि जो अल्लाह, फ़रिश्तों पैगम्बरों और जिब्राइल का शत्रु है अल्लाह भी ऐसे क़ाफ़िरों का शत्रु है।

Whosoever is an enemy to God, or his angels, or his apostles, or to Gabriel, or Michael, verily *God is an enemy to the unbelievers*!

(७) इन्नल्लज़ीन कफ़रू वमातू वहुम् कुफ़्फ़ारुन् उलाइक अ़लैहिम् लअ्नतुल्लाहि वल् मलाइकति वन्नासि अज्मअ़ीन्। खालिदीन फ़ीहा, लायुखफ़्फ़फ़ु अन्हुमुल् अ़ज़ाबु वलाहुम् युन्ज़रून्।

(सू० २। रु० १६। आ० १६१)

अर्थः—जो लोग (जीते जी दीन हक़ से) इंकार करते रहे, और इंकार ही की हालत में मर गए यही हैं जिन पर खुदा की लानत और फ़रिश्तों की और आदमियों की सब की, हमेशा २ इसी (फिटकार) में रहेंगे,

न तो उन (पर) से अज़ाब (दुःख) ही हलका किया जावेगा और न उनको (अज़ाब के बीच बीच में) मुहलत ही मिलेगी।

Surely they who believe not, and die in their unbelief, upon them shall be the curse of *God*, *and* of the angles, and of all men; they shall 'remain under it for ever, their punishment shall not be alleviated,' neither shall they be regarded.*

F. n. (*) Or, as Jallalodin expounds it, God will not wait for their repentence.

(८) मसलुल्लज़ीन क़फ़रू कमसलिल्लज़ी यन्अिक़ु बिमाला यस्मउ इल्ला दुआअंव्वनिदाअन्, सुम्मुम् बुक्मुन् उ़म्युन् फ़हुम् लायअ्क़िलून्।

(सू० २। रु० २१। आ० १७१)

"और जो लोग काफ़िर हैं (बुतपरस्ती वा मूर्ति पूजा में) उनकी मिसाल उस शख़्श की सी है जो एक चीज़ के पीछे पड़ा चिल्ला रहा है (और) वह सुनती सुनाती ख़ाक नहीं (तो उस का चिल्लाना) महज़ (बेसूद) बुलाना और पुकारना है (जिस-का कुछ नतीजा नही बुतों पर क्या मुँहसर है यह लोग खुद भी) बहरे गूंगे, अन्धे हैं तो यह समझते (बूझते) कुछ भी नहीं।

इस आयत में मूर्ति पूजकों की और उनकी मूर्तियों की हंसी उड़ाई गई है और दोनों को बहरे, गूंगे और अन्धे कहा गया है।

The unbelievers are like unto one who crieth aloud to that which heareth not so much as his calling, or the sound of his voice. They are deaf, dumb and blind, therefore they do not understand.

(९) व मंय्यर्तदिद् मिन्कुम् अन् दीनिही फ़यमुत् वहुव काफ़िरुन् फ़ उलाइक .हबित्वत् अअ्मालुहुम् फ़िद्दुनिया वल् आख़िरति, वउलाइक अस्हाबुन्नारि, हुम् फ़ीहा ख़ालिदून् । (सू० २ । रु० २७ । आ० २१७)

और जो तुममें अपने दीन से वरगश्ता (बिमुख) होगा और कुफ्र ही की हालत में मर जायगा तो ऐसे लोगों का किया कराया (क्या दुनिया) और (क्या) आख़िरत (परलोक) (दोनों) में अकारत और यही हैं दोज़ख़ी (और) वह हमेशा (हमेशा) दोज़ख़ (नरक) ही में रहेंगे ।

But whoever among you shall turn back from his religion, and die an infidel, their works shall be vain in this world and the next; they shall be the *companions of hell fire, they shall re main therein for ever.*

(१०) वमन् आद फ़ उलाइक अस्हाबुन्नार् ।

(सू० २ । रु० ३८ । आ० २७५)

और जो (मनाही हुए पीछे) फिर (सूद) ले तो ऐसे ही लोग दोज़ख़ी हैं और वह हमेशा दोजख़ ही में रहेंगे ।

But whosoever returneth to usury, they shall be companions of *hell fire*, they shall continue therein for ever.

(११) इन्नल्लज़ीन कफ़रू लन् तुग़्निय अन्हुम् अम्वालुहुम् वला औलादुहुम् मिनल्लाहि शैअा, व उलाइकहुम् वक़ूदुन्नार। (सू० ३। रु० २। आ० ६)

जो लोग (दीन इस्लाम से) मुंकिर हैं। अल्लाह के हां न तो उनके माल ही उनके कुछ काम आएंगे और न उनकी औलाद ही (उनके कुछ काम आयगी) ओर यही हैं जो दोज़ख के ईंधन होंगे।

As for the *infidels*, their wealth shall not profit them anything, nor their children, against God; they shall be the fuel of hell fire.

(१२) लायत्तखिज़िल् मोमिनूनल् काफ़िरीन औलियाअ मिन्दूनिल् मोमिनीन्, वमंय्यफ़्अल् ज़ालिक फ़लैस मिनल्लाहि फ़ी शैइन् इल्ला अन् तत्तक़ू मिन् हुम् तुक़ाः। (सू० ३। रु० ३। आ० २७)

मुसल्मानों को चाहिये कि मुसल्मानों को छोड़कर काफ़िरों को अपना दोस्त न बनाएं, और जो ऐसा करेगा तो उससे और अल्लाह से कुछ सरोकार नहीं, मगर (इस तदबीर से) किसी तरह पर उन (की शरारत) से बचना चाहो (तो खैर)

(यहां मौलवी मुहम्मद अली आदि अन्य सब अनुवादकों ने Protectors की जगह Firends यही अनुवाद किया है)

Let not the faithfull take the infidels for their protectors rather than the faithful: he who doth this shall not be protected of God at all; unless ye fear any, danger from them.

(१३) फ़ अम्मल्लज़ीन कफ़रू फ़ उअ़ज़्ज़िबुहुम् अ़ज़ाबन् शदीदन् फ़िद्दुनिया वल् आख़िरति, वमालहुम् मिन्नासिरीन् । (सू० ३ । रु० ६ । आ० ५५)

तो जिन्होंने (तुम्हारी नबुव्वत से) इंकार किया उनको तो दुनिया और आख़िरत (दोनों में बड़ी सख्त मार देंगे और कोई उनका हामी व मददगार न होगा (कि उनको हम से बचाए)

Moreover, as for the infidels, I will punish them with a grievous punishment in this world, and in that which is to come; and there shall be none to help them.

(१४) वमंय्यब्तग़ि ग़ैरल् इस्लामि दीनन् फ़लंय्युक़्बल मिन्हु, वहुव फ़िल् आख़िरति मिनल् ख़ासिरीन् ।

(सू० ३ रु० ६ । आ० ८४)

और जो शख्स इस्लाम के सिवा किसी और दीन को तलाश करे तो खुदा के यहां उसका यह दीन मक्बूल (स्वीकृत) नहीं

और वह आख़िरत में ज़ियांकारों (टोटे वालों) में होगा, खुदा ऐसे लोगों को क्यों हिदायत देने लगा जो (तौरात की पेशीन-गोइयों (भविष्य वाणियों) से पैग़म्बर-आख़िरुज़्ज़माँ पर) ईमान लाए पीछे लगे कुफ्र करने।

Whoever followeth any other religion than Islam it shall not be accepted of him : and in the next life he shall be of those who perish.

उलाइक जज़ाउहुम् अन्न अ़लैहिम् लअ़्नतल्लाहि वल् मलाइकति वन्नासि अज्मअ़ीन्, ख़ालिदीन फ़ीहा, ला युख़फ़्फ़फ़ु अ़न्हुमुल् अ़ज़ाबु वलाहुम् युन्ज़रून्।
(आ० ८६)

इनकी सज़ा यह है कि इन पर खुदा की और फ़रिश्तों की और (दुनिया जहान के) लोगों की सब की फिटकार, कि उसी फिटकार में हमेशा (हमेशा) रहेंगे, न तो (आख़िरत में) इन से अज़ाब (कष्ट) ही हलका किया जावेगा और न उनको मुहलत ही दी जावेगी।

Their reward shall be. that on them shall fall the curse of God, and of angels and of all mankind: they shall remain under the same for ever ; their torment shall not be mitigated, neither shall they be regarded.

इन्नल्लज़ीन कफ़रू वमातू वहुम् कुफ़्फ़ारुन् फ़लंय्युक़्बल मिन् अ़हदिहिम् मिल् उल् अर्ज़िव ज़हबंव्वल विफ़्तदा

बिही उलाइक लहुम् अज़ाबुन् अलीमुंव्वमा लहुम् मिन्नास्विरीन् । (आ० ६०)

जो इस्लाम से मुंकिर हुए और इंकार ही की हालत में मर मर गए उनमें का कोई शख्स (कुर्रए) जमीन (की गोल) भर कर भी सोना मुआवज़े में देना चाहे तो हर्गिज़ क़ुबूल नहीं किया जावेगा, यही लोग हैं जिनको दर्दनाक अज़ाब होगा और (उस वक्त) उनका कोई भी मददगार न होगा।

Verily they *who believe not*, and die in their unbelief, the world full of gold shall in no wise be accepted from any of them, even though he should give it for his ransom, they shall suffer a grievous punishment, and they shall have none to help them.

(१५) वला यःसबन्नल्लज़ीन कफ़रू अन्नमा नुम्ली लहुम् खेरुल्लि अन्फ़ुसिहिम्, इन्नमा नुम्ली लहुम् लियज़्दादू इस्मन्, वलहुम् अज़ाबुम्मुहीन्।

(सू० ३ । रु० १८ । आ० १७७)

और जो लोग (दीन इस्लाम से) इंकार कर रहे हैं, इस ख़याल में न रहें कि हम जो उनको ढील दे रहे हैं यह कुछ उनके हक़ में बिहतर है, हम तो उनको सिर्फ इसलिए ढील दे रहे हैं ताकि और गुनाह (पाप) समेट लें और (आख़िरकार) उनको ज़िल्लत (तिरस्कार) की मार है।

And let not the *unbelievers* think, because we grant them lives long and prosperous, that it is better for their souls : we grant them long and prosperous *lives only that their inequity may be increased ; and they shall suffer an ignominous punishment.*

(१६) इन्नल्लज़ीन कफ़रू बिआयातिना सौफ़ नुस्लीहिम् नारन् कुल्लमा नज़्वेजत् जुलूदुहुम् बद्दल्नाहुम् जुलूदन् ग़ैरहा लियज़ूक़ुल् अज़ाब, इन्नल्लाह कान अज़ीज़न हकीमा। (सू० ४। रु० ८। आ० ५६)

जिन लोगों ने हमारी आयतों से इंकार किया हम उनको (कयामत के दिन) दोज़ख (नरक) में (लेजा) दाखिल करेंगे, जब उनकी खालें गल जांयगी तो हम इस गर्ज़ से कि अज़ाब (का मज़ा अच्छी तरह) चखें, गली हुई खालों की जगह उनकी दूसरी (नई) खालें पैदा कर देंगे बेशक अल्लाह (बड़ा) जबरदस्त साहब तदबीर है।

Verily those who *disbelieve* our signs (or communications) we will *surely cast to be broiled in hell fire* ; so often as their skins shall be well burned, we will give them other skins in exchange, that they may taste the sharper torment ; for God is mighty and wise.

(१७) इन्नल्लज़ीन कज़्ज़बू बिआयातिना वस्तक्बरू अन्हा लातुफ़त्तहु लहुम् अब्वाबुस्समाइ वला यद्खुलूनल्

जन्नत हत्ता यलिजल् जमलु फ़ी सम्मिल् खियात्ति,
व कज़ालिक नज्ज़िल् मुज्रिमीन् ।

बेशक जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया और उनसे अकड़ बैठे न तो उनके लिए आसमान के दर्वाज़े खोले जावेंगे और न बहिश्त ही में दाखिल होने पाएंगे यहां तक कि ऊंट सुई के नाके में से (होकर न) गुज़र जाए, और मुज्रिमों (अपराधियों) को हम ऐसी ही सज़ा दिया करते हैं ।

Verily they who shall charge our signs (or communications) with falsehood, and shall proudly reject them, the gates of heaven shall not be opened into them, neither shall they enter into paradise, until a camel pass through the eye of a needle ; and thus will we reward the wicked doers.

लहुम् मिन् जहन्नम मिहादुंव्वमिन् फ़ौक़िहिम् गवा-
शिन्, व कज़ालिक नज्ज़िज़्वालिमीन् ।

(सू० ७ । रु० ५ । आ० ४० । ४१)

कि उनके लिए आग का बिछौना होगा और उनके ऊपर से आग ही का ओढ़ना, और सरकश लोगों को हम ऐसी ही सज़ा दिया करते हैं ।

Their couch shall be in hell, and over them shall be coverings of fire, and thus we reward the unjust.

(१८) लक़द् कफ़रल्लज़ीन क़ालू इन्नल्लाह हुवल् मसीहुब्नु मर्यम्। (सू० ५। रु० ३। आ० १७)

जो लोग कहते हैं कि मर्यम के बेटे मसीह वही खुदा हैं, कुछ शक नहीं कि यह काफ़िर होगए।

They are *infidels*, who say, Verily God is Christ the son of Mary.

(१९) याऐयुहल्लज़ीन आमनू लातत्तख़िजुल्यहूद वन्नस्वारा औलियाअ; बअ्ज़ुहुम् औलियाउ बअ्ज़िन्, वमंय्यतवल्लहुम् मिन्कुम् फ़इन्नहुम् मिन्हुम्, इन्नल्लाह लायःदिल् कौमज़्ज़ालिमीन्।

(सू० ५। रु० ८। आ० ५१)

डिपुटी नज़ीर अहमद का अनुवादः—

मुसलमानो यहूद व नसारा को दोस्त न बनाओ यह लोग तुम्हारी मुख़ालिफ़त में बाहम) एक दूसरे के दोस्त हैं और तुम में से कोई उनको दोस्त बनायगा तो बेशक वह (भी) उनही में का (एक) है क्यों कि खुदा (ऐसे) ज़ालिम लोगों को राह (रास्त) नहीं दिखाया करता है।

O true believers, take *not the Jews or Christians for your friends*; they are friends the one to the other; but whoso among you taketh them for his friends, he is surely one of them, Verily God directeth not unjust people.

(२०) व मंय्युशाक़िक़िर्रसूल मिम् बअ्दि मातबैयन लहुल्

हुदा व यत्तबिअ़् ग़ैरसबीलिल् मोमिनीन नुवल्लिही मातवल्ला वनुस्वलिही जहन्नम, वसाअत् मस्वीरा।

(सू० ४ । रु० १७ । आ० ११५)

और जो शख़्स राहे रास्त के ज़ाहिर हुए पीछे पैग़म्बर से किनारा कश रहे और मुसलमानों के रास्ते के सिवा (दूसरे रस्ते) होले तो जो (रस्ता) उसने इख़्तयार कर लिया है हम उसको जहन्नम (नरक) में (ले जा) दाखिल करेंगे और वह (बहुत ही) बुरी जगह है।

But whose separateth himself from the apostle, after true direction hath been manifested unto him, and followeth any other way than that of the true believers, we will cause him to obtain that to which he is inclined, *and *will cast him to be burned in hell ; and an unhappy journey shall it be thither.*

(*. viz., Error, and false notions of religion)

(२१) याऐयुहल्लज़ीन आमनू लातत्तख़िज़ू आबाअकुम् व इख़्वानाकुम् औलियाअ इनिस्तह़ब्बुल् कुफ़्रा अलल् ईमानि, व मैंयतवल्लहुम् मिन्कुम् फ़उलाइक हुमुज़् ज़्वालिमून्। (सू० ६ । रु० ३ । आ० २३)

अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे भाई ईमान के मुक़ाबले में कुफ़्र को अज़ीज़ रखें तो उनको (अपना) रफ़ीक़ (मित्र)

न बनाओ, और जो तुम में से ऐसे बाप भाईयों के साथ दोस्ती रखेगा तो यही लोग (हैं जो खुदा के नज़दीक) ना फर्मान हैं।

O true believers. take not your fathers or your brothren for friends, if they love infidelity above faith ; and whosoever among you shall take them for his friends they will be unjust doers.

(२२) फ़इज़न् सलखल् अश्हुरुल् हुर्मु फ़क़्तुलुल् मुश्रिकीन हैसु बजत्तुमूहुम् वखुज़ूहुम् वःसुरूहुम् वक् उ़दूलहुम् कुल्ल मर्स्वद्, फ़इन् ताबू व अक़ामुस्स्वलात व आतुज़्ज़कात फ़ख़ल्लू सबीलहुम् इन्नल्लाह ग़फ़ूरुर्-हीम्। (सू० ६ । रु० १ । आ० ५)

फिर जब अदबके महीने निकल जाएं तो मुश्रिकीन (मूर्त्ति-पूजकों या ईश्वरेतर पदार्थ के पूजकों) को जहां पाओ क़त्ल करो और उनको गिरफ्तार करो और उनका मुहासरा करो और हर घात की जगह उनकी ताक में बैठो फिर अगर वह लोग तोबा करें और नमाज़ पढ़ें और ज़कात (धार्मिककर) दें तो उनका राष्ता छोड़ दो क्योंकि अल्लाह बख्शने वाला मिहरबान है।

And when the months wherein ye are not allowed to attack them shall be past, kill the *idolators wheresoever ye shall find them** and take them prisoners, and besiege them, and lay wait for them in every convenient place. But if

they shall repent and observe the appointed times of prayer, and pay the legal alms, dismiss them freely ; for God is gracious and merciful.

(*) Either within or without the sacred territory).

(२३) याऐयुहल्लज़ीन आमनू इन्नमल् मुश्रिकून नज्सुन् फ़ला यक्रबू मस्जिदल्ह.राम बअ् द आमिहिम् हाज़ा, वइन्ख़िफ़्तुम् .अैलतन् फ़सौफ़ युग़्नीकुमुल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही इन्शाअ, इन्नल्लाह अलीमुन् .हकीम् ।

(सू० ६ रु० ४ । आ० २८)

क़ातिलुल्लज़ीन लायोमिनून बिल्लाहि वलाबिल् यौमिल् आख़िरि वला युह.र्रिमून माह.र्रमल्लाहु वरसूलुहू, वला यदीनून दीनल् .हक़्क़ि मिनल्लज़ीन ऊतुल् किताब ह.त्ता युअ्.तुल् जिज़्यत अ॑य्यदिंव्व-हुम् स्वाग़िरून् । (आ० २६)

मुसल्मानो मुश्रिक तो निरे गन्दे हैं तो इस बरस के बाद (अदब) व हुर्मत वाली मस्जिद (यानी ख़ाने काबा) के पास भी न फटकने पावें । और (उनके साथ लेन देन बंद हो जाने से) तुम को मुफ़लिसी (ग़रीबी) का अंदेशा हो तो खुदा (पर भरोसा रखो वह) चाहेगा तो तुमको अपने फ़ज़्ल (अनुग्रह) से ग़नी (समृद्ध) कर देगा, बेशक खुदा (सबकी नीयतों को) जानता (और) हिकमत वाला है ।

पहले किताब जो न ख़ुदा को मानते हैं (जैसा कि मानने का हक़ है) और न रोज़ आखिरत को और न अल्लाह और उसके रसूल की हराम की हुई चीज़ों को हराम समझते हैं और न दीन हक़ को तस्लीम करते हैं मुश्रिकों के अलावा) इन (लोगों) से भी लड़ो यहां तक कि ज़लील होकर अपने हाथों से जज़िया दें ।

O true believers, Verily the *idolators ere unclean* let them *not therefore come near unto the holy* temple after this year* and if ye fear want, by the cutting of trade and communications with them, God will enrich you of his abundance, if He pleaseth ; for God is knowing and wise.

Fight against them who believe not in God nor in the last day, and forbid not that which God and his apostle have forbidden, and profess not the true religion, of those unto whom the scriptures have been delivered, until they pay tribute by right of subjection, and they be reduced low.

(*) which was the ninth month of the Hijra. In consequence of this prohibition neither Jews nor Christians, nor those of any other religion are suffered to come near Macca to this day.

(२४) याऐयुहल्लज़ीन आमनू क़ातिलुल्लज़ीन यलूनकुम् मिनल् कुफ़्फ़ारि वल् यजिदू फ़ीकुम् ग़िल्ज़ा ।

(सू० ६ । रु० १६ । आ० १२३)

मुसल्मानों ! अपने आस पास के काफ़िरों से लड़ो, और चाहिये कि वह तुम में करारापन मालूम करें । और जाने रहो कि अल्लाह उन लोगों का साथी है जो उनसे डरते हैं ।

O true believers, *wage war against such of the infidels as are near you ;* * *and* let them find severety † in you : and know that God is with those who feor him.

* Either of your kindred or neighbours ; for these claim your pity and care in the first place, and their conversion ought first to be endeavoured. The persons particularly meant in this passage are supposed to have been the Jews of the tribes of Koreidha and Nadhir, and those of Khaibar; or else the Greeks of Syria.

† Or fierceness in war.

(२५) उलाइकल्लज़ीन कफ़रू बिआयाति रब्बिहिम् वलिक़ाइही फ़हबित्वत् अअ्मालुहुम् फ़लानुक़ीमु लहुम् यौमल् क़ियामति वज़्ना । ज़ालिक जज़ाउहुम् जहन्नमु बिमा कफ़रू वत्तख़ज़ू आयाती व रुसुली हुज़्वन् ।

(सू० १८ । रु० १२ । आ० १०५ । १०६)

यही वह लोग हैं जिन्होंने अपने पर्वर्दिगार की आयतों को और उसके हुज़ूर में हाज़िर होने को न माना तो उनके अमल अकारत होगए, तो कयामत के दिन हम उनके (आमाल नेक) का (रत्ती बराबर) वज़न (भी हिसाब में) क़ायम नहीं रखें गे।

यह जहन्नम इनकी उस बद किरदारी का बदला है कि इन्होंने कुफ्र किया और हमारी आयतों और हमारे पैग़म्बर की हंसी उड़ाई।

These are they who believe not in the *signs* of their Lord, or that they shall be assembled before him ; wherefore their works are vain, and we will not *allow them any weight on the day of resurrection.*

This shall be their reward, namely, *hell* ; for *that they have disbelieved,* and have held my signs and my apostles in derision.

(२६) वजअ़ल्नल्अग़्लाल फ़ी अअ़्नाक़िल्लज़ीन कफ़रू ।

(सू० ३४ । रु० ४ । आ० ३३)

और जो लोग (दुनिया में) कुफ्र करते रहे हम उनकी गर्दनों में तौक़ डाल देंगे।

And we *will put shackles on the necks* of those who *disbelieved.*

(२७) वइन तअ्जब् फ अजबुन् क़ौलुहुम् अइज़ा कुन्ना तुराबन् अइन्ना लफ़ी खल्क़िन् जदीदिन्, उलाइ-कल्लज़ीन कफ़रू बिरब्बिहिम्, व उलाइकल् अग़्लालु फ़ी अअ्नाक़िहिम्, व उलाइक अस्हा-बुन्नारि, हुम् फ़ीहा खालिदून्।

(सू० १३। रु० १। आ० ५)

अर्थः—और (ऐ पैग़म्बर) अगर तुम (दुनिया में किसी बात पर) आश्चर्य करो तो काफ़िरों का (यह) कहना भी आश्चर्य जनक ही है कि जब हम (गल सड़ कर) मिट्टी हो जांयगे तो क्या हम को (फिर) नये जन्म में आना होगा? यही लोग हैं जिन्हों ने अपने पर्वदिंगार (की क़ुदरत) का इन्कार किया और यही लोग हैं जिन की गर्दनों में क़यामय के दिनों तौक़ (पड़े) होंगे और यही लोग हैं दोज़ख़ी कि यह दोज़ाख़ में हमेशा (हमेशा) रहेंगे।

If thou dost wonder (at the *infidels* denying the resurrection), surely wonderful is their saying, After we shall have been (reduced to) dust, shall we (be restored) in a new creature? These are they who *believe not* in their Lord; these (shall have) collars on their necks and these (shall be) the inhabitants of (hell) fire: therein shall they abide for ever.

(२८) बल्ज़ुय्यिन लिल्लज़ीन कफ़रू मक्रुहुम् व स्वुद्दू अनि-
स्सबील् , व मंय्युज़्वलिलिल्लाहु फ़मा लहू मिन् हाद् ।
लहुम् अज़ाबुन् फ़िल् ,हयातिद्दनिया वल अज़ाबुल्
आख़िरति अशक़्कु, वमा लहुम् मिनल्लाहि मिंव्वाक् ।
(सू० १३ । रु० ५ । आ० ३३ । ३४)

अर्थः—बात यह है कि मुंकिरों को उनकी चालाकियां भली कर दिखाई और राह (रास्त) से रोक दिया; और जिसको ख़ुदा गुमराह करे तो कोई उसका राह दिखाने वाला नहीं। इन लोगों के लिए दुनिया की जिंदगी में (भी) अज़ाब है (और आख़िरत में भी) और आख़िरत का अज़ाब (दुनिया के अज़ाब से) अलबत्ता बहुत (ज़्यादा) सख़्त है।

But the deceitful procedure of the infidels was prepared for them ; and they are turned aside from the right path : for he whom God shall cause to err, shall have no director. They shall suffer a punishment in this life ; but the punishment of the next shall be more grievous: and there shall be none to protect them against God.

"बल् ज़ुय्यिन लिल्लज़ीन कफ़रू मक्रुहुम" Maulana Mohammad Ali translates thus:—Rather, their plans are made to appear fairseeming to those who disbelieve.

(२६) वस्तफ़्तहू व ख़ाब कुल्लु जब्बारिन् अ़नीद्। मिंव्वरा-इही जहन्नमु वयुस्क़ा मिम्माइन् स्वदीद्। यतजर्रउ़हू वला यकादु युसीग़ुहू व यातीहिल् मौतु मिन् कुल्लि मकानिंव्वमाहुव बिमय्यितिन्, व मिंव्वराइही अ़ज़ाबुन् ग़लीज़।

(सू० १४। रु० ३। आ० १५। १६। १७)

अर्थः—और पैग़म्बरों ने चाहा कि (उनका और काफ़िरों का झगड़ा कहीं) फ़ैसल हो चुके (चुनाचे उनकी ख़्वाहिश पूरी हुई) और हर एक हेकड़ ज़िद्दी हलाक हुआ (यह तो दुनियां की सज़ा थी और) उसके बाद (उसके लिए) दोज़ख़ है और (वहां) उसको पीप का पानी पिलाया जायगा) कि उसको ज़बर दस्ती चुस्किया ले ले कर पीएगा और (फिर भी) उसको गले से न उतार सकेगा और मौत (है कि) हर तरफ़ से आती (हुई दिखाई देती) है और वह (फिर भी नहीं मरता, और उसको (और) अ़ज़ाबे सख़्त (भी) दर पेश है।

And they asked assistance of God, and every rebellious perverse person failed of success. Hell lieth unseen before him, and he shall have filthy water * given him to drink: he shall sup it up by little and little, and he shall not easily let it pass his throat, because of its nauseousness; death also shall come upon him from every quarter yet he shall not

die; and before him shall there stand prepared a grievous torment.

NOTE:—(*) Which will issue from the bodies of the dammed, mixed with purulent matter and blood.

(३०) व जअलू लिल्लाहि अन्दादल्लियुज़िल्लू अन् सबीलिही, क़ुल् तमत्तऊ फ़इन्न मस्वीरकुम् इलन्नार् ।

(सू० १४ । रु० ५ । आ० ३०)

अर्थः—और उन लोगों ने अल्लाह के मद्दे मुक़ाबिल (दूसरे माबूद) खड़े किए हैं ताकि (लोगों को) उसके रास्ते से गुमराह करें, (ऐ पैग़म्बर इन लोगों से) कहो कि (ख़ैर चन्द रोज़ दुनिया में) रस बस लो फिर तो तुम को दोज़ख़ की तरफ़ जाना ही है।

They also set up idols as co-partners with God, that they might cause men to stray from his path. Say unto them, enjoy the pleasures of this life for a time; but your departure hence shall be into hell fire.

(३१) इन्नल्लज़ीन ला योमिनून बिआयातिल्लाहि ला यःदीहिमुल्लाहु वलहुम् अज़ाबुन् अलीम् ।

(सू० १६ । रु० १४ । आ १०४)

मन् कफ़र बिल्लाहि मिम् बअ्दि ईमानिही इल्ला मन् उक्रिह वक़ल्बुहू मुत्वमइन्नुम बिल् ईमानि व

लाकिम्मन् शर.ह बिल् कुफ्रि स्वद्रन् फ़ अ़लैहिम् ग़ज़्ववुम् मिनल्लाहि, वलहुम् अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम् ।

(सू० १६ । रु० १४ । आ० १०६)

अर्थः—जो लोग (हेकड़ी और हठ धर्मी से) ख़ुदा की आयतों पर ईमान नहीं लाते ख़ुदा भी उनको राहे रास्त नहीं दिखाया करता और (आख़िरत में) उनको अ़ज़ाबे दर्द नाक (होना) है ।

जो शख़्स (कुफ्र पर) मजबूर किया जावे मगर उसका दिल ईमान की तरफ़ से मुतमइन हो (उससे कुछ मुवाख़ज़ा नहीं लेकिन जो शख़्स ईमान लाए पीछे ख़ुदा के साथ कुफ्र करे और कुफ्र भी करे तो जी खोल कर तो ऐसे लोगों पर ख़ुदा का ग़ज़ब और उनके लिए बड़ा (सख़्त) अ़ज़ाब है ।

Moreover as for those who believe not in the signs of God, God will not direct them, and they shall suffer a painful torment : Whoever denieth God, after he hath believed, except him steadfast in the faith, shall be severely chastized : but whoever shall voluntarily profess infidelity, on those shall be indignation of God fall, and they shall suffer a grievous punishment.

२) व इ़ज़ा क़रातल्क़ुर्आन जअ़ल्ना बैनक व बैनल्लज़ीन ला योमिनून बिल् आख़िरति ि़हजाबम्मस्तूरा । व

जअ़ल्ना अ़ला क़ुलूबिहिम् अकिन्नतन् अंय्यफ़्क़हूहु व फ़ी आज़ानिहिम् वक़्रा ।

(सू० १७ । रु० ५ । आ० ४५ । ४६)

अर्थः—और (ऐ पैग़म्बर) जब तुम कुरान पढ़ते होते हो हम तुम में और उन लोगों में जिन को आख़िरत का यक़ीन नहीं एक गाढ़ा पर्दा (हायल) कर देते है (ताकि राहे हक़ न देख सकें) और उनके दिलों पर ग़िलाफ़ डाल देते हैं ताकि कुरान को न समझ सकें और उनके कानों में (एक तरह की) गिरानी (पैदा कर देते हैं ताकि सुन न सकें) ।

When thou readest the Quran, we place between thee and those who believe not in the life to come, a dark veil ; and we put coverings over their hearts, lest they should understand it, and in their ears thickness of hearing.

(३३) व मंय्यःदिल्लाहु फ़हुवल् मुःतदि, व मंय्युज़्वलिल् फ़लन् तजिद लहुम् औलियाअ़ मिन् दूनिही, व नःशुरुहुम् यौमल् क़ियामति अ़ला वुजूहिहिम् उ़म्यंव्व बुक्मंव्व स्वुम्मा, मावाहुम् जहन्नमु, कुल्लमा ख़बत् ज़िद्नाहुम् सअ़ीरा । ज़ालिक जाज़ाउहुम् बिअ़न्नहुम् कफ़रू बिआयातिना व क़ालू अइज़ा कुन्ना अ़िज़्वा-मंव्वरुफ़ातन् अइन्नल् मबूऊ़सून ख़ल्क़न् जदीदा ।

(सू० १७ । रु० ११ आ० ९७ । ९८)

अर्थः—और जिसको ख़ुदा हिदायत दे वही राहे रास्त पर है, और जिसको (वह) गुम राह करे तो फिर (ए पैग़म्बर) ऐसे गुमराहों के लिए तुम ख़ुदा के सिवा (दूसरे) मददगार (भी) नहीं पाओगे और क़यामत के दिन हम उन लोगों को उनके मुंह के बल उठाएंगे अंधे और गूंगे और बहरे उनका (आख़िरी) ठिकाना दोज़ख़; जब भुजने को होगी हम उनके लिए (उस को) और ज्यादा भड़कावेंगे, यह (जहन्नुम इस लिए) उन की सज़ा है कि वह हमारी आयतों से इंकार किया करते, और (क़यामत का होना सुन कर) कहा करते थे कि जब हम (मरे पीछे गल सड़ कर) हड्डियां और रेज़ा २ हो जायंगे तो क्या हम अज़ सरे नौ पैदा करके उठा खड़े किए जायंगे।

Whom God shall direct, he shall be the rightly directed ; and whom he shall cause to err thou shalt find none to assist besides him. And we will gather them together on the day of resurrection, creeping on their faces, blind, and dumb, and deaf : their abode shall be hell ; so often as the fire thereof shall be extinguished, we will re-kindle a burning flame to torment them (1). This shall be their reward because they disbelieved in our signs, and say, when we shall have been reduced to bones and dust, shall we surely be raised new creatures ?

NOTE—(1) When the fire shall go out or abate for want of fuel, after the consumption of the skins and flesh of the damned, we will add fresh vigour to the flames by giving them new bodies.

(३४) उलाइकल्लज़ीन कफ़रू बिआयाति रब्बिहिम् व लिक़ाइही फ़ हबित्वत् अअ्मालुहुम् फ़ला नुक़ीमु लहुम् यौमल् क़ियामति वज़्ना। ज़ालिक जज़ाउहुम् कफ़रू वत्तखज़ू आयाती वरुसुली हुज़ुवन्। (सू० १८। रु० १२। आ० १०५। १०६)

अर्थः—यही वह लोग हैं जिन्हों ने अपने पर्वदिगार की आयतों को और (क़यामत के दिन) उसके हुज़ूर में हाज़िर होने को न माना तो इनके अमल अकारत हो गए, तो क़यामत के दिन हम इन (के आमाले नेक) का (रत्ती बराबर) वज़न (भी हिसाब में) क़ायम नहीं रखेंगे। यह जहन्नुम इन (की उस बद किरदारी) का बदला है कि इन्हों ने कुफ़्र किया और हमारी आयतों और हमारे पैग़म्बरों की हंसी उड़ाई।

These are they who believe not in the signs of their Lord, or that they shall be assembled before him; wherefore their works are vain, and we will not allow them any weight on the day of resurrection. This shall be their reward, namely, hell; for that they have disbelieved, and have held my signs and my apostles in derision.

(३५) अलम् तर अन्ना अर्सल्नशयात्वीन अलल् काफ़िरीन तउज़्ज़ुहुम् अज़्ज़न्। फ़ला तअ्जल् अलैहिम्, इन्नमा नउ्दुलहुम् अद्दन्। यौम नःशुरुल् मुत्तक़ीन इलर्र ह्मानि वफ़्दन्। व नसूक़ुल्मुज्रिमीन इला जहन्नम विर्दन्।

(सू० १६। रु० ६। आ० ८३ से ८६ तक)

अर्थः—(ऐ पैग़म्बर) क्या तुमने (इस बात पर) नज़र नहीं की कि हमने शैतानों को काफ़िरों पर छोड़ रखा है कि वह इनको उकसाते रहते हैं तो (ऐ पैग़म्बर) तुम इन (काफ़िरों) पर (नुज़ूले अज़ाब की) जल्दी न करो हम इनके लिए (रोज़े क़यामत के आने के) बस (दिन) गिन रहे हैं जब कि हम पर्हेज़गारों को। (ख़ुदाए) रहमान के (यानी अपने) हुज़ूर में महमानों की तरह जमा करेंगे, और गुनहगारों को प्यासे (ऊंटों की तरह) जहन्नुम की तरफ़ हांकेगे।

Dost thou not see that we send the devils against the infidels, to incite them (to sin) by (their) instigations? Wherefore be not in haste (to call down destruction) upon them; for we number unto them a (determined) number (of days of respite). On a certain day we will assemble the pious before the merciful (in an honorable manner) as ambassadors come (into the presence of a prince) but we will drive the wicked into hell.

(३६) वमन् अअ्रज़्व अन् ज़िक्री फ़इन्नलहू मअ़ीशतन् ज़्वन्कौं व नःशुरुहू यौमल क़ियामति अअ्मा । क़ाल रब्बि लिम हशर्तनी अअ्मा व क़द् कुन्तु बस्वीरा । क़ाल कज़ालिक अतत्क आयातुना फ़ नसीतहा व कज़ालिकल् यौम तुंसा ।

(सू० २० । रु० ७ । आ० १२४ से १२६ तक)

अर्थः—और जिसने हमारी याद से रूगर्दानी की तो उसकी ज़िंदगी ज़ीक़ में गुज़रेगी और क़यामत के दिन (भी) हम उस को अन्धा (करके) उठायंगे, (वह) कहेगा ऐ मेरे पर्वर्दिगार तूने मुझको अंधा (करके) क्यों उठाया और मैं तो (दुनिया में अच्छा ख़ासा) देखता (भालता) था, (ख़ुदा) फ़माएगा ऐसा ही (होना चाहिये था दुनिया में) हमारी आयतें तेरे पास आईं मगर तूने उनकी कुछ ख़बर न ली, और उसी तरह आज तेरी (भी) ख़बर न ली जायगी ।

But whosoever shall turn aside from my admonition verily he shall (lead) a miserable life, and we will cause him to appear (before us) on the day of resurrection, blind. (And he shall say, O Lord, why hast thou brought me (before thee) blind, whereas before I saw clearly ? (God shall answer, Thus (have we done), because our signs came unto thee, and thou didst forget them ; and in the same manner shalt thou be forgotten this day.

(३७) वलक़द् आतैना इब्राहीम रुश्दहू मिन् क़ब्लु वकुन्ना बिही आ़लिमीन्। इज़् क़ाल लिअबैहि व क़ौमिही मा हाज़िहित्तमासीलुल्लती अन्तुम् लहा आ़किफ़ून्। क़ालू वजद्ना आबाअना लहा आ़बिदीन्। क़ाल लक़द् कुंतुम् अंतुम् व आबाउकुम् फ़ी ज्वलालिम्मुबीन्। क़ालू अजेतना बिल्हक़्क़िक़ अम् अन्त मिनल् लाआ़बीन्। क़ाल बल् रब्बुकुम् रब्बुस्समावाति वल् अर्ज़िल्लज़ी फ़त्वरहुन्न, व अन अ़ला ज़ालिकुम् मिनश्शाहिदीन्। वतल्लाहि लअकीदन्न अस्वनामकुम् बअ् द अन् तुवल्लू मुब्दिरीन्। फ़ जअ़लहुम् जुज़ाज़न् इल्ला कबीरल्लहुम् लअ़ल्लहुम् इलैहि यर्जिऊन्। क़ालू मन् फ़अ़ल हाज़ा बिआलिहतिना इन्नहू लमिनज़्ज़ालिमीन्। क़ालू समिअ् ना फ़तैं यज़्कुरुहुम् युक़ालु लहू इब्राहीम्। क़ालू फ़ातू बिही अ़ला अअ़युनिन्नासि लअ़ल्लहुम् यश्हदून्। क़ालू अअन्त फ़अ़ल्त हाज़ा बिआलिहतिन या। इब्राहीम्। क़ाल बल् फ़अ़लहू कबीरुहूम् हाज़ा फ़स्अलूहुम् इन् कानू यंत्विक़ून्। फ़ रजअ़ू इला अंफ़ुसिहिम् फ़क़ालू इन्नकुम् अंतुमुज़्ज़ालिमून्। सुम्म नुकिसू अ़ला रुऊसिहिम्, लक़द् अलिम्त मा हाउलाइ यंत्विक़ून्। क़ाल अफ़तअ़ बुदून मिन्

दूनिल्लाहि माला यंफ़उकुम् शैऔं व ला यज़ुरुकुम्, उफ़्फ़िल्लकुम् वलिमा तअ़्बुदून मिन् दूनिल्लाहि, अफ़ला तअ़्क़िलून् ।

(सू० २१ । रु० ५ । आ० ५१ से ६७ तक)

क़ालू हर्रिक़ूहु वंसुरू आलिहतकुम् इन् कुंतुम् फ़ाइलीन् । (आ० ६८)

क़ुल्ना या नारु ! कूनी बर्दंव्वसलामन् अ़ला इब्राहीम् (आ० ६९)

अर्थ:—और इब्राहीम को हमने शुरू ही से फ़हमे सलीम अ़ता की थी और हम उन (की सलाहियत) से (ख़ूब) वाक़िफ़ थे जब उन्हों ने अपने बाप और अपनी क़ौम (के लोगों) से कहा कि (यह) मूरतें जिन (की परस्तिश) पर तुम जमे बैठे हो यह हैं क्या चीज़ ? वह बोले हमने अपने बड़ों को इन ही की परस्तिश करते देखा है । (इब्राहीम ने) कहा कि बेशक तुम्हारे और तुहारे बड़े सरीह गुमराही में पड़े रहे, वह बोले क्या तू हमारे पास सच्ची बात लेकर आया है या दिल-लगी करता है, (इब्राहीम ने) कहा (दिल्लगी की बात नहीं) बल्कि आसमान व ज़मीन का पर्वर्दिगार जिसने इनको पैदा किया (वही) तुम्हारा भी पर्वर्दिगार है और मैं इसका गवाह हूँ, और (आहिस्ता से यह भी कहा कि) बख़ुदा तुम्हारे पीठ फेरे और गए पीछे मैं तुम्हारे बुतों के साथ चाल करूंगा, चुंनाचे (इब्राहीम ने) बुतों को (तोड़ फोड़) टुकड़े २ कर

दिया, मगर उनके बड़े (बुत को इस गरज़ से (रहने दिया) कि वह उस की तरफ़ रुजू करें। (जब लोगों को बुतों के तोड़े जाने का हाल मालूम हुआ तो) उन्होंने कहा (अरे) हमारे माबूदों के साथ यह गुस्ताख़ी किसने की ? इस में शक नहीं कि उसने बड़ा ही जुल्म किया, (बाज़) बोले कि वह नौजवान (आदमी) जिसको इब्राहीम के नाम से पुकारा जाता है उसको हमने (बुराइ के साथ) इन (बुतों) का तज़करा करते सुना है। (लोगों ने) कहा तो उसको (सब) आदमियों के सामने लाओ ताकि (जो कुछ जवाब दे) लोग (उसके) गवाह रहें। (ग़र्ज़ इब्राहीम बुलाए गए और) लोगों ने (उनसे) पूछा कि इब्राहीम क्या हमारे माबूदों के साथ यह (हरकत) तूने की है ? (इब्राहीम ने) कहा, (नहीं) बल्कि यह (बुत) जो इन (सब) में बड़ा है उसने यह हरकत की (होगी), और अगर यह (बुत) बोल सकते हों तो इन्हीं से पूछ देखो, उस पर लोग अपने जी में सोचे और (आपस में) लगे कहने कि बिला शुबह तुम ही सरे नाहक़ हो, फिर अपने सरों के बल औंधे (इसी गुम राही में) ढकेल दिए गए और (इब्राहीम से बोले तो यह बोले कि) तुमको तो मालूम है कि यह (बुत) बोला नहीं करते। (इब्राहीम ने) कहा क्या तुम खुदा के सिवा ऐसी चीज़ों को पूजते हो जो न तुमको कुछ फ़ायदा ही पहुँचाएं और न तुमको (किसी तरह का) नुक़्सान ही पहुँचाएं। तुफ़् है तुम पर और उन चीज़ों पर जिनको तुम ख़ुदा के सिवा पूजते हो क्या

तुम (इतनी बात भी) नहीं समझते। (वह आपस में) लगे कहने कि अगर तुमको (कुछ) करना है तो इब्राहीम को (आग में) जलादो और अपने माबूदों की मदद करो, (चुनाचे उन लोगों ने इब्राहीम को आग में झोंक दिया)। हमने (आग को) हुक्म दिया ऐ आग! इब्राहीम के हक़ में ठंडक और सलामती (की मूजिब) बन।

And we gave unto abraham his direction heretofore, and we knew him to be worthy of the revelation wherwith he was favoured. Remember when he said unto his father, and his people, what are these images, to which ye are so entirely devoted ? They answered, we found our fathers worshipping them; He said, Verily both ye and your fathers have been in a manifest error. They said, Dost thou seriously tell us the truth, or art thou one who jestest with us ? He replied, verily your Lord is the Lord of the heavens and the earth ; it is he who hath created them : and I am one of those who bear witness thereof. By God I will surely devise a plot against your idols, after ye shall have retired from them, and shall have turned your backs, and in the peoples' absence he went into the temple where the idols stood, and he brake them all in pieces, except the

biggest of them: that might lay the blame upon that. And when they were turned, and saw the havoc which had been made, they said, who hath done this to our Gods? He is certainly an impious person. And certain of them answered, we heard a young man speak reproachfully of them: he is named Abraham. They said, Bring him therefore before the eyes of the people, that they may bear witness against him. And when he was brought before the assembly they said unto him, Hast thou done this unto our gods, O Abraham? He answered, nay, that biggest of them hath done it-but ask them, if they can speak. And they returned unto themselves, and said the one to the other, Verily ye are the impious persons. Afterwards they relapsed into their former obstinacy, and said Verily thou knowest that these speak not. Abraham answered, do ye therefore worship besides God, that which cannot profit you at all, neither can it hurt you? Fie on you, and upon that which ye worship besides God! Do ye not understand? They said, burn him, and avenge your gods; if ye do this it will be well. And when Abraham was cast into the burning pile, we said O fire, be thou cold and a preservation unto Abraham.

(३८) इन्नकुम् व मा तअ्बुदून मिन् दूनिल्लाहि हस्बु जहन्नम, अन्तुम् लहा वारिदून्। लौ कान हाउलाइ आलिहतम् मावरदूहा, व कुल्लुन् फ़ीहा ख़ालिदून्। लहुम् फ़ीहा ज़फ़ीरुंव्वहुम् फ़ीहा ला यस्मऊन्।

(सू० २१ । रु० ७ । आ० ९८ । ९९ । १००)

अर्थः—तुम और जिन चीज़ों की तुम ख़ुदा के सिवा परस्तिश करते थे (वह सब) दोज़ख़ का ईंधन बनोगे (और) तुम (सब) को दोज़ख़ में जाना होगा। अगर यह (तुम्हारे माबूद सच्चे) माबूद होते तो दोज़ख़ में न जाते, और (अब) तुम सब को इसी में हमेशा (हमेशा) रहना है। इन लोगों को दोज़ख़ में चिलवांस लगी होगी और वह (अपने चिल्लाने के ग़ुल में) वहां (किसी दूसरे की बात भी) न सुन सकेंगे।

Verify (both) ye, (O men of Mecca), and (the idols) which ye worship besides God, (shall be) cast (as fuel) into hell (fire) : ye shall go down into the same. If these were (really) gods, they would not go down into the same : and all (of them) shall remain therein for ever. In that (place) shall they groan (for anguish) ; and they shall not hear (aught) there in (1).

NOTE.—(1) Because of their astonishment and the insupportable torments they shall endure ; or, as others expound the words, "they shall not hear therein" anything which may give them the least comfort.

(३६) हाज़ानि ख़स्मानिख़्तस्मू फ़ी रब्बिहिम्, फ़ल्लज़ीन कफ़रू क़ुत्त्वेअ़त् लहुम् सियाबुम् मिन्नारिन्, युस्वब्बु मिन् फ़ौक़ि रुऊसिहिमुल् .हमीम्। युस्हरु बिही माफ़ी बुत्वूनिहिम् वल् जुलूद्। व लहुम् मक़ामिउ मिन् .हदीद्। कुल्लमा अरादू अंय्यख़्रुजू मिन्हा मिन् ग़म्मिन् उअ़ीदू फ़ीहा, वज़ूक़ू अज़ाबल् .हरीक़्।

(सू० २२। रु० २। आ० १६ से २२ तक)

अर्थः—(दुनिया में) यह दो (फ़रीक़) हैं एक दूसरे के मुख़ालिफ़ (और) आपस में अपने पर्वर्दिगार के बारे में झगड़ते हैं, (एक फ़रीक़ ख़ुदा को मानता है और एक नहीं मानता) तो जो लोग (.ख़ुदा को) नहीं मानते उनके लिए आग के कपड़े क़ता कराए गए हैं, (और वह उनको दोज़ख़ में पहनाए जायंगे और) उनके सरों पर से खौलता हुआ पानी उंडेला जाएगा जिस (की गर्मी) से जो कुछ उनके पेट में है (यानी अँतड़िया वग़ैरः) और खालें (सब) गल जायंगी, और उनके (मारने के) लिए लोहे के गुर्ज़ होंगे (जिनसे उनकी कोबाकारी की जायगी) (और दोज़ख़ के अंदर) घुटे २ जब २ (उनका जी घबराएगा और) उससे निकलना चाहेंगे तो उसी में फिर ढकेल दिये जाएंगे, और (उनको हुक्म दिया जायगा कि आग में) जलने के अज़ाब (के मज़े पड़े) चखा करो।

These are two opposite parties, who dispute concerning their Lord. And they who believe

not shall garments of fire fitted unto them : boiling water shall be poured on their heads ; their bowels shall be dissolved thereby, and (also) their skins; and they shall (be beaten) with maces of iron. So often as they shall endeavour to get out of (hell), because of the auguish (of their torments), they shall be dragged back into the same ; and (their tormentors shall say unto them), Taste ye the pain of burning.

(४०) व बुर्रिज़तिल् ज़हीमु लिल् ग़ावीन । व क़ील लहुम् ऐनमा कुंतुम् तअ्बुदून, मिन् दूनिल्लाहि, हल् यन्स्वुरूनकुम् औ यन्तस्विरून । फ़ कुब्किबू फ़ीहा हुम् वल् ग़ावून व जुनूदु इब्लीस अज्मऊन् ।

(सू० २६ । रु० ५ । आ० ९१ से ९४ तक)

अर्थः—और दोज़ख़ निकाल कर गुमराहों के सामने कर दी जायगी और उनसे कहा जायगा कि ख़ुदा के सिवा जिन चीज़ों को तुम पूजते थे (अब) वह कहां हैं, क्या वह तुम्हारी कुछ मदद कर सकते या (तुम्हारी तरफ़ से कुछ) इंतक़ाम ले सकते हैं, फिर वह (माबूद) और गुमराह लोग (जो उनकी परस्तिश करते थे) और शैतान के लश्कर सब के सब औंधे मुँह दोज़ख़ में ढ़केल दिये जाएंगे ।

And hell shall appear plainly to those who shall have erred, and it shall be said unto

them, where (are your deities which ye served besides God? Will they deliver you (from punishment), or will they deliver themselves? and they shall be cast into the same (both) they, and those who have seduced (to their worship); and all the host of Eblis.

(४१) इन्नल्लाह लअ्नल् काफ़िरीन व अअ्द लहुम् सअ्रीरा, खालिदीन फ़ीहा अबदा, ला यजिदून वलीयंव्वलानस्वीर्। यौम तुक़ल्लबु वुजूहुहुम् फ़िन्नारि यक़ूलून यालैतना अत्वअ्नल्लाह व अत्वअ्नर्रसूल्।

(सू० ३३। रु० ८। आ० ६४।६५।६६)

अर्थः—बेशक अल्लाह ने काफ़िरो को फटकार दिया है और उनके लिए धधकती हुई आग तय्यार कर रक्खी है उसमें सदा को और हमेशा २ रहेंगे, (और) न (किसी को अपना) हिमायती ही पाएंगे और न मददगार। (यह वह दिन होगा) जबकि इनके मुंह (सीख़ के कबाब की तरह दोज़ख़ की) आग में उलट-पलट किये जाएंगे और (अफ़सोस के तौर पर) कहेंगे कि ऐ काश हमने (दुनिया में) अल्लाह का कहना माना होता और (ऐ काश) हमने रसूल का कहना माना होता।

Verily God hath cursed the infidels, and hath prepared for them a fierce fire, wherein they shall remain for ever: they shall find no patron or defender. On the day (whereon) their faces shall be rolled in (hell) fire, they

shall say, Oh that we had obeyed God, and obeyed (his) apostle !

(४२) वल्लज़ीन कफ़रू लहुम् नारु जहन्नम, ला युक़्ज़्वा अलैहिम् फ़ यमूतू वला युख़फ़्फ़फ़ु अन्हुम् मिन् अज़ाबिहा, कज़ालिक नज्ज़ी कुल्ल कफ़ूर। वहुम् यस्त्वरिखून फ़ीहा, रब्बना ! अख़्रिज्ना नअ्मल् स्वालिहन् ग़ैरल्लज़ी कुन्ना नअ्मलु, अवलम् नुअ़म्मिर्कुम् मायतज़क्करु फ़ीहि मन् तज़क्कर व जाअकुमुन्नज़ीरु, फ़ज़ूक़ू फ़मा लिज़्ज़्वालिमीन मिन् नस्वीर् ।

(सू० ३५ । रु० ४ । आ० ३६ । ३७)

अर्थः—और जो लोग मुंकिर हैं उनके लिए दोज़ख़ की आग (तय्यार) है, न तो उनको क़ज़ा आती है कि मर रहें और न दोज़ख़ का अज़ाब ही उनसे हल्का किया जाता है, हम हर एक नाशुक्र को इसी तरह सज़ा दिया करते हैं। और यह लोग दोज़ख़ में (पड़े) चिल्लाते होंगे कि ऐ हमारे पर्वर्दिगार हमको (यहां से) निकाल कर फिर दुनिया में ले चल कि हम जैसे अमल करते रहते थे वैसे नहीं (बल्कि) नेक अमल करेंगे। (हम उनको जवाब देंगे कि) क्या हमने तुमको इतनी उम्रें नहीं दी थीं कि जिसको सोचना (मंजूर) होता वह इतनी उम्र में (अच्छी ख़ासी तरह) सोच समझ लेता, और (उसके अलावा) तुम्हारे पास (हमारे अज़ाब से) डराने वाला (रसूल भी) पहुंचा, तो अब (अपने किए के) मजे चखो कि नाफ़र्मान लोगों का (यहां) कोई मददगार नहीं।

But for the unbelievers (is prepared) the fire of hell : it shall not be decreed them to die (a second time) ; neither shall (any part) of the punishment thereof be made lighter unto them. Thus shall every infidel be rewarded. And they shall cry out aloud in (hell, saying), Lord, take us hence, and we will work righteousness, and not what we have (formerly) wrought. (But it shall be answered them), Did we not grant you lives of length sufficient, that whoever would be warned might be warned therein ; and did not the preacher come unto you ? taste, thefore, (the pains of hell). And the unjust shall have no protector.

(४३) लक़द् ह़क़्क़ल् क़ौलु अ़ला अक्सरि हिम् ला योमिनून् । इन्ना जअ़ल्ना फ़ी अअ़्नाक़िहिम् अग़्लालन् फ़हिय इलल् अज़्क़ानि फ़हुम् मुक़्मह़ून् । व जअ़ल्ना मिम्बैनि ऐदीहिम् सद्दंव्वमिन् ख़ल्फ़िहिम् सद्दन् फ़ अग़्शैनाहुम् फ़हुम् ला युब्सिरून् ।

(सू० ३६ रु० १ । आ० ७ । ८ । ९)

अर्थः—इनमें से अक्सर पर तो फ़र्मूदा (ख़ुदा) पूरा हो चुका है तो यह (किसी तरह) मानने वाले नहीं, हमने इनकी गर्दनों में (भारी २) तौक़ डाल दिये हैं और वह ठोड़ियों तक (फंसे हुए) हैं तो इनके सर (ऐसे) उललकर रह गए हैं (कि

इनको रस्ता दिखाई ही नहीं देता। और हमने एक दीवार (तो) इनके आगे बनाई और एक दीवार इन के पीछे, और ऊपर से इनको दिया ढांक तो यह देख ही नहीं सकते।

Our sentence hath justly been pronounced against the greater part of them; wherefore they shall not believe. We have put yokes on their necks, which come up to their chins; and they are forced to hold up their heads: and we have set a bar before them and a bar behind them; and we have covered them with darkness; wherefore they shall not see.

(४४) क़ुलिल्लाह अअ्बुदु मुख़्लिस्वल्लहू दीनी, फ़अ्बुदू माशेतुम् मिन् दूनिही, क़ुल् इन्नल् ख़ासिरीनल्लज़ीन ख़सिरू अन्फ़ुसहुम् व अःलीहिम् यौमल् क़ियामति, अला! ज़ालिक हुवल् ख़ुस्रानुल् मुबीनु लहुम् मिन् फ़ौक़िहिम् ज़्वुललुम् मिनन्नारि व मिन् तःतिहिम् ज़्वुललुन्, ज़ालिक युख़व्विफ़ुल्लाहु बिही अिबादहू, या अिबादि फ़त्तक़ून्।

(सू० ३६। रु० २। आ० १५। १६)

अर्थः—(ऐ पैग़म्बर इन लोगों से) कहो कि मैं तो ख़ुदा ही की फ़र्माबर्दारी मद्दे नज़र रखकर उसी की इबादत करता हूँ, (रहे तुम) सो उसके सिवा जिसको चाहो पूजो, (तुम ही को उसका ख़मयाज़ा भुगतना पड़ेगा। ऐ पैग़म्बर इन लोगों से)

कह दो कि फ़िल् हक़ीक़त घाटे में वह लोग हैं जो क़यामत के दिन अपना और अपने अहलो अयाल का नुक़सान कर लेंगे। सुनोजी ! यही तो सरीह घाटा है उनके ऊपर से आग ही का उनका ओढ़ना होगा और उनके नीचे (आग ही का) बिछौना, यही (तो वह अज़ाब है) जिससे ख़ुदा अपने बंदों को डराता है, तो ऐ हमारे बंदों ! हमारा ही डर मानो।

Say, I worship God, exhibiting my religion pure unto him : but do ye worship that which ye will, besides him. Say, Verily they (will be) the losers, who shall lose their own souls, and their families, on the day of resurrection : is not this manifest loss ? Over them shall be) roofs of fire and under them (shall be floors (of fire). . With this doth God terrify his servants : wherefore, O my servants fear me.

(४५) अल्लज़ीन कज़्ज़बू बिल् किताबि व बिमा अर्सल्ना बिही रुसुलना, फ़ सौफ़ यअ्लमून्। इज़िल्अग़्लालु फ़ी अअ्नाक़िहिम् वस्सलासिलु युस्हबून, फ़िल्-हमीमि, सुम्म फ़िन्नारि युस्जरून्। सुम्म क़ील लहुम् ऐन मा कुंतुम् तुश्रिकून, मिन् दूनिल्लाहि, क़ालू ज़ल्लू अन्ना बल्लम् नकुन्नद्ऊ मिन् क़ब्लु शैअन्। कज़ालिक युज़िल्लुल्लाहुल् काफ़िरीन्।

(सू० ४० । रु० ८ । आ० ७० से ७४)

अर्थः—मुहम्मद ख़ुदा के भेजे हुए (पैग़म्बर) हैं, और जो लोग उनके साथ हैं काफ़िरों के हक़ में बड़े सख्त (हैं मगर) आपस में रहम दिल।

Mohammed is the apostle of God ; and those who are with him (are) fierce against the unbelievers, (but) compassionate towards one another.

(४८) सुम्म इन्नकुम् ऐयुहज़्ज़ाल्लूनल् मुकज़्ज़िबून्। ल आकिलून मिन् शजरिम् मिन् ज़क़्क़ूमिन्, फ़मालिऊन मिन्हल्बुत्वून, फ़ शारिबून अलैहि मिनल् हमीम्। फ़ शारिबून शुर्बल् हीम्, हाज़ा नुज़ुलुहुम् यौमद्दीन्।
(सू० ५६। रु० २। आ० ५१ से ५६ तक)

अर्थः—फिर ऐ गुमराहो ! (और क़यामत के) झुठलाने वालो ! तुमको (दोज़ख़ में) थूहर का दरख़्त खाना होगा और इसी से पेट भरना पड़ेगा फिर ऊपर से झुलसता हुआ पानी पीना होगा और पीना (भी) होगा (तो डकडका कर) प्यासे ऊंटों का सा पीना, क़यामत के दिन यह उनकी ज़्याफ़त होगी।

Then ye, O, men who have erred, and denied (the resurrection) as a folsehood, shall surely eat of (the fruit of) the tree of al zakkum, and shall fill (your) bellies therewith-and ye shall drink thereon boiling water ; and ye shall drink as a thirsty camel drinketh. This (shall be) their entertainment on the day of judgement.

(४६) लातजिदु क़ौमैंयोमिनून बिल्लाहि वल् यौमिल् आखिरि युवाद्दून मन् हाद्दल्लाह वरसूलहू वलौ कानू आबाअहुम् औ अब्नाअहुम् औ इख़्वानहुम् औ अशीरतहुम्, उलाइक कतब फ़ी क़ुलूबिहिमुल् ईमान व ऐयदहुम् बिरूहिम् मिन्हु, वयुदखिलुहुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तःतिहल् अन्हारु खालिदीन फ़ीहा। (सू० ५८। रु० ३। आ० २२)

अर्थः—(ऐ पैगम्बर) जो लोग अल्लाह और रोजे आखिरत का यक़ीन रखते हैं उनको तो तुम न देखोगे कि ख़ुदा और उसके रसूल के मुख़ालिफ़ों के साथ दोस्ती रखें, गो वह उनके बाप या उनके बेटे या उनके भाई या उनके कंबे ही के (क्यों न) हों यही (वह पक्के मुसलमान) हैं जिनके दिलों के अन्दर ख़ुदा ने ईमान का नक़्श कर दिया है, और अपने फ़ैज़ाने ग़ैबी से उनकी ताईद की है, और वह उनको (बहिश्त के ऐसे) बाग़ों में लेजा दाख़िल करेगा, जिनके तले नहरें (पड़ी) बह रही होंगी और (वह हमेशा) हमेशा उन्ही में रहेंगे।

Thou shalt not find people who believe in God and the last day, to love him who opposeth God and his apostle; although they be their fathers, or their sons, or their brotheren, or their nearest relations. In the hearts of these hath God written faith; and he hath strengthened them with his spirit: and and will lead them into gardens, beneath which rivers flow, to remain therein for ever.

(५०) याऐयुहन्नबीयु ! जाहिदिल् कुफ़्फ़ार वल् मुनाफ़िक़ीन वग़लुज़्व अ़लैहिम्, वमा वाहुम् जहन्नमु, व बेसल्मस्वीर् । (सू० ६६ । रु० २ । आ० ६)

अर्थः—ऐ पैगम्बर काफिरों के साथ (हाथ से) और मुनाफ़िकों के साथ (ज़बान से) जिहाद करते रहो, और उन पर सख्ती रखो, और उनका ठिकाना दोज़ख है, और वह (बहुत ही) बुरी जगह है ।

O prophet attack the infidels (with arms), and the hypocrites (with arguments) ; and treat them with severity : their abode shall be hell, and an ill journey (shall it be thither).

(५१) इन्नल्लज़ीन कफ़रू मिन् अ़हलिल् किताबि वल् मुश्रिकीन फ़ी नारि जहन्नम खालिदीन फ़ीहा, उलाइक हुम् शर्रुल् बरीयः । (सू० ६८ । रु० १ । आ० ६)

अर्थः—बेशक अहले किताब और मुश्रिकीन में से जो लोग (दीने हक़ से) इन्कार करते रहे (वह आखिर कार) दोज़ख की आग में होंगे (और) उसमें हमेशा (हमेशा) रहेंगे, यही बदतरीन खलायक हैं ।

Verily those who believe not, among those who have received the scriptures, and among the idolators, shall be cast into the fire of hell, to remain therein for ever.

Printed by L. Sewa Ram Chawla
at the Imperial Fine Art Press, Burn Bastion Road, Delh